Department of Prakrit and Sanskrit

Jain VishvaBharati Institute, Ladnun

Syllabus

Three Months Certificate in Prakrit

(From the Academic Year 2020-2021)

Approved by B.O.S. in Prakrit

निर्देश :

1. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में प्राकृत भाषा के प्रति रूचि जागृतकर, इसके माध्यम से हमारी प्राचीन संस्कृति को जानना व समझना है।
2. इस पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने की अर्हता न्यूनतम 18 वर्ष है।
3. यह प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम वर्ष में दो बार संचालित होगा–सितम्बर से नवम्बर एवं जनवरी से मार्च।
4. इस के अंतर्गत प्रतिदिन दो घंटे की कक्षाएं संचालित की जायेगी।
5. इस प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम में दो प्रश्न–पत्र होंगे। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 100 अंकों का होगा, जिसमें 70 अंकों की लिखित परीक्षा एवं 30 अंकों का आन्तरिक मूल्यांकन होगा।
6. व्याकरण में सूत्र नहीं पूछे जायेंगे।

प्रथम पत्र–प्राकृत व्याकरण 70+30 = 100

ईकाई–I 17 ½

- प्राकृत भाषा का स्वरूप एवं विकास
- प्राकृत व्याकरण की परम्परा
- स्वर, स्वरपरिवर्तन
- व्यंजन–संयुक्त व्यंजन, असंयुक्त व्यंजन

ईकाई–II 17 ½

- संधि
- लिंगविचार
- कारक–विभक्ति, उपपद विभक्ति

ईकाई–III 17 ½

धातुप्रक्रिया, धातु के प्रत्यय (वर्तमान भूत, भविष्यत्, आज्ञार्थक) धातुरूप–पढ, गच्छ, हो, णी/णे, लिह, हस, सय, भुंज, जिम, ठा, पिब, शब्दरूप–(पु.–देव, मुनि), (स्त्री.–माला, मति), (नपु.–वन, दधि) सर्वनाम शब्द–सर्व (तीनों लिंगों में)

ईकाई–IV 17 ½

प्राकृत स्वयं शिक्षक 1–25 पाठ, हिन्दी से प्राकृत, प्राकृत से हिन्दी अनुवाद

प्राकृत भाषा प्रबोधिनी–अपठित प्राकृत अंश का हिन्दी, अपठित हिन्दी अंश का प्राकृत अनुवाद

नोट–व्याकरण मेंसूत्रों को समाविष्ट नहीं किया गया है।

पाठ्यपुस्तकें–

- प्राकृत भाषा प्रबोधिनी, डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राज.)
- प्राकृत स्वयं शिक्षक–प्रो. प्रेमसुमन जैन, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर
- प्राकृत बोध–आचार्य सुनील सागर, जैनसंस्कृति शोध संस्थान, इंदौर, सन्, 2007

द्वितीय पत्र–प्राकृत साहित्य 70+30 = 100

इकाई–1 प्राकृत गद्य सोपान 17 ½

- गिहउववणं
- विज्जालयं
- कुडुम्बं
- पभायबेला
- गुण–गरिमा

इकाई–2 प्राकृत गद्य सोपान 17 ½

- दिण–चरिया
- सरोवरं
- लोअ–सरूवं
- वत्तालावं
- जीवलोओ
- अम्हाणपुज्जणीआ

इकाई–3 17 ½

- बृहद् द्रव्य संग्रह (आचार्य नेमिचन्द्रसिद्धान्त प्रणीत)–प्रथमाधिकार (गाथा 1–27)

इकाई–4 17 ½

- अतुला तुला (प्रथम विभाग, विविधा–अप्पनिवेदणं (गाथा 1–25)
- उत्तराध्ययन–अध्ययन–10 दुमपत्तयं

पाठ्यपुस्तकें–

1. प्राकृत गद्य सोपान– 'क' एवं 'ख' भाग, प्रो. प्रेमसुमन जैन, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर
2. बृहद् द्रव्य संग्रह (आचार्य नेमिचन्द सिद्धान्त प्रणीत)
3. अतुला तुला, मुनिनथमल, अनुवादक–संपादक – मुनिदुलहराज, आदर्श साहित्य संघ प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1976
4. उत्तराध्ययन सूत्र, अनु. – उपाध्याय आत्मारामजी, संपादक आचार्य शिवमुनि, भगवान महावीर मेडिटेशन रिसर्च सेन्टर टस्ट, 2006
5 उत्तरज्झयणाणि,वाचना प्रमुख आचार्य तुलसी, संपादक–विवेचक, आचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्वभारती, लाडनूं, पंचम संस्करण, 2006
6. उत्तराध्ययनसूत्र, युवाचार्य मधुकरमुनि, आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, 2000